भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 8 | बुधवार, 26.8.98 | वार्षिक चंदा : 50.00

धरती के मंगल.....प.पू. पप्पाजी का प्राकट्य दिन!

अहो हो.....पहली सितम्बर ! बृहद् गुणातीत समाज की चारों पंखुड़ियों–संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों के मंगल प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन.....धरती पर मानवस्वरूप में प्रगट होकर भक्तों के दिल में अपनी मूर्ति द्वारा सच्चे सुख, शांति और आनंद व दिव्यता का अनुभव कराने वाली प्रभुस्वरूप विभूति !

प.पू. पप्पाजी यानि समता के साक्षात् स्वरूप, विपरीत संजोगों में भी अडिग निष्ठा व स्थिरता से सागर समान सहजावस्था ! सरलता के सम्राट, करुणा में आकाश समान, क्षमा में पृथ्वी समान, अल्पसंबंध वालों के पास दासत्व का मूर्तिमान स्वरूप.... आज 83 - 84 वर्ष की आयु में भी प.पू. पप्पाजी को देश-विदेश में मुक्तों के लिए निरन्तर विचरण करते हुए देखते हैं तो आँखों में पानी आ जाता है कि हमें निहाल करने ये गुणातीत स्वरूप कितने गरजु बने हैं.....

प.पू. पप्पाजी का जीवन केवल भक्तिमय है। भक्ति यानि-प्रेमभाव, आदरभाव और निर्दोषभाव से प्रभु का भजन करना और सब में उसका कर्ता-हर्तापन स्वीकारना ! प.पू.पप्पाजी ने तो प्रभु के प्रति की पराभक्ति अदा करने अल्प संबंध वालों को माथे का मुकुट माना व स्वयं का कुछ अस्तित्व ही नहीं रखा। वे अपने विरोधी के शब्दों व अपमान को स्मित से स्वीकार सकते हैं और ऐसे ही स्मित से वे हमें देहभाव से परे करके हृदय में आनंद भरते हैं।

सो, बाह्य रूप से हमारे जैसे ही दिखाई पड़ने वाले प.पू. पप्पाजी कोई सामान्य व्यक्ति नहीं, बल्कि अद्भुत ब्रह्मशक्ति की धारक विभूति हैं और वही शक्ति का प्रभु की भक्ति अदा करने एवं भक्तों को जीतेजी अक्षरधाम का सुख देने वे उपयोग कर रहे हैं।

प.पू. पप्पाजी शैशव से ही खूब सावधान और उर्ध्व की ओर गतिमान, एकावधानी, एकाग्र, सदैव जाग्रत.....अतः उनका दर्शन सौम्य जरूर है, लेकिन उनका कार्य भव्य है। तभी तो उनके प्रथम सम्पर्क में आते ही हर एक मुक्त एक अनोखी दिव्यता का भीतर में अनुभव करता है। उनके मुखारविंद पर हमेशा परमशांति व प्रफुल्लितता का तो दर्शन होता ही है, पर उनकी वह मूर्ति सीधी चेतना में घुसकर अपना अधिकार कर लेती है और ऐसा लगने लगता है कि जन्मोजन्म का संबंध हो–'ये मेरे अपने हैं.....हम इनके हैं। जिन्हें ढूंढने अब तक भटक रहे थे, वह खोज जैसे पूरी हुई।' जीव एक निश्चिंतता, निर्भयता का अहसास-अवर्णनीय सुख अनुभव करने लगता है।

प.पू. पप्पाजी जैसे पुरुष हमारे लिए आदर्श रखने ही जीवन जीते हैं। प.पू. पप्पाजी की जीवन शैली नज़दीक से देखें तो ख्याल आयेगा कि वे खूब स्पष्ट मानते हैं कि महाराज अपने संबंध में आये सभी चैतन्यों के प्रकृति व प्रारब्ध को इस्तेमाल करके उन्हें शुद्ध चैतन्य ब्रह्म बना कर ही छोड़ते हैं, सो भगवान व उनके भक्तों का अभाव कभी लेना ही नहीं। सिद्धांतिक जीवन के वे परम आदर्श हैं, परन्तु सिद्धान्त उनका आदर्श नहीं ! आदर्श तो एक ही कि योगी की प्रसन्नता ! प्रभु से जो दूर ले जाए, ऐसी व्यक्ति, पदार्थ या मान्यता के प्रति अत्यंत कठोर, किन्तु.....प्रभु के अल्प संबंध वालों के दास और हृदय मक्खन से भी मुलायम ! खुद के लिए साधु की दृष्टि और दूसरों के लिए महाराज का संबंध–वही जीवनमंत्र और वही प्रत्येक पल का नियम.....जब से वे योगीबापा के योग में आए, तभी से बापा को ही कर्ता, हर्ता और नियंता माना। प.पू. पप्पाजी का सूत्र है कि कुछ भी विचार आए तो उस पर छन्नी रखो कि यह करना मेरे प्रभु की भक्तिरूप है? उनके जीवन का रहस्य यही है कि तुम्हें जो प्रत्यक्ष गुरुहरि मिले हैं, उनमें सम्पूर्ण रूप से लय व लीन हो जाओ। वहां

मन-बुद्धि बंद करके उनको दिव्य व अन्तर्यामी मान कर उनका सेवन कर लो। उस प्रत्यक्ष स्वरूप में सम्यक् निर्दोषभाव रख कर उसका वचन लेकर लग पड़ना–वही साधना की पूर्णाहुति ! तुम्हें उनकी जितनी परीक्षा करनी है वह पहले कर लो, उसके दिव्य तत्व की अनुभूति होने पर पूर्ण श्रद्धा से समर्पित हो जाओ।

और.... तभी प.पू. पप्पाजी के जीवन में कभी कोई चालाकी, दिखावा, शो-शा का आभासमात्र भी दिखाई नहीं पड़ा। जितना वे मानते, उतना ही वर्तते–निष्क्रिय या शुष्क भी नहीं...सारंगपुर में जब प.पू. योगी बापा की जन्म जयंती (65 वीं) पहली बार मनाई जा रही थी, तब सेवा दौरान दो हरिभक्तों की आपस में तू-तू, मैं-मैं हो गई। एक ने दूसरे को गाली दे दी। जब उस हरिभक्त ने प.पू. पप्पाजी के पास फरियाद करी, तो प.पू. पप्पाजी ने अनुपम माहात्म्यदर्शन कराते हुए कहा–उसने कुछ दिया ही है ना ? तुमसे कुछ लिया तो नहीं है ना ? ऐसे बापा के संबंध वाले–गाली देने वाले कहाँ से ! उसे मेरे पास भेजो। मैं उसे एक-एक गाली के बदले पैसा दूँगा !

प.पू. पप्पाजी के जीवन की वास्तविकता यह है कि हमें कोई सत्य देने से पहले वे स्वयं वर्तते हैं। उनके जीवन में दंभ नहीं।

24 लाख का जब केस हुआ तब भी प.पू. योगीबापा का कर्ता-हर्तापन माना, पर प.पू. योगीबापा भगवान का स्वरूप होंगें या नहीं–यह निष्ठा ज़रा भी डिगी नहीं। उनके अतंर की मस्ती गई नहीं और अपने ध्येय की ओर अडिग रहे। हार्ट की बीमारी आई तब भी देहातीत रहे। बीमारी को भी प्रभु का प्रसाद ही माना। इन प्रसंगों के दौरान संबंध में आये हुए को भी हिम्मत ही दी। भजन कराकर बल दिया व निरन्तर प्रभु की ओर श्रद्धा जगाते रहे–माहात्म्य बढ़ाया। सत्संग में हुए अनेक अपमानों में भी पप्पाजी ने कभी बाह्यदृष्टि नहीं रखी। बस ! सब में रहकर एक प.पू. योगीबापा ही खेल रहे हैं, वही दृष्टि दृढ़ता से पकड़े रखी।

प.पू. पप्पाजी की जो गुणातीत स्थिति है वह अवर्णनीय है। उनका समग्र जीवन चैतन्यलक्षी है। हर एक चैतन्य का जिस तरह भला हो, प्रगति आसानी से हो पाए वैसा वे हर चैतन्य के साथ वर्ताव करके उसे साधना मार्ग में अग्रसर करते हैं। प्रभु की निष्काम भक्ति करने में खुद का सर्वस्व सौंप देते हैं..... वे लोक के नहीं, भोग के नहीं; ना ही देह के, ना ही पक्ष के; वे तो केवल रोम-रोम में प्रभु प्रगटाई हुई अलमस्त विभूति हैं ! **हमारे जीवन में सबसे बड़ी घटना या जीवन की परम धन्यता यही बनी है कि इन गुणातीत पुरुषों की गोद में हमें बैठने का मौका मिल गया।** अब इनकी मर्जी के मुताबिक इनके होकर, इनकी प्रसन्नता पा लेना–वही जीवन का उद्यम होना चाहिये।

हे पप्पाजी ! हमारा खूब भाग्य है कि गुणातीत स्वरूप के रूप में हमें आपकी भव्य प्राप्ति हुई। तो इस प्रागट्य दिन पर एक विशिष्ट प्रार्थना और संकल्प करें कि हे पप्पाजी ! आप तो गुणातीत स्वरूप हो..... आपकी जीवन भावना है कि योगी का अल्प संबंध वाला भी प्रगति करता चैतन्य है। इस तथ्य को सच में वर्तन में लाकर हमारे जीवन में हम साकार करें। महिमा केवल कथा में, पुस्तकों में ही सीमित ना रह जाये। उसे जीवन में उतारने कोई भी गुरुतंती.....निजी महत्वकांक्षा वगैरह कुछ भी बाधारूप ना बने। हमें विश्वास है कि आप पूर्ण मिले हो और हमें पूर्ण करके ही छोड़ोगे। परन्तु, प्रत्येक पल आपका कर्ता-हर्तापन सहज मानें व आपकी दिव्य लीला का दर्शन करके आप जीतेजी अक्षरधाम की जो मौज देने ही पधारे हो, वो हम दिल की सच्चाई से जीकर ले पायें.....

लेकिन इस सबसे अधिक–

हे पप्पाजी ! आपके मुताबिक शायद हम ऐसा जी ना पायें, ऐसी स्थिति को भी ना पायें, पर आप इस देह से–इसी रूप में सवा सौ बरस हमारे बीच इस धरती पर प्रत्यक्ष दर्शन देने जरुर रहना ! यही आज के मंगल दिन पर आपके चरणों में प्रार्थना..... क्योंकि आप ही हमारा मंगल हो।

✡✡✡✡✡

'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

- ..... हमें तो प्रभु मानव स्वरूप में मिल गए। बस ! वो जिस तरह राजी हो जाएं, वैसे उन पर जीवन न्यौछावर कर देना है। वही हमारी साधना है। और कोई साधना ही नहीं करनी। लेकिन उसमें बीच में आ जाता है मन ! वो अहं से प्रदूषित है। इसी लिए सारी झंझट है; बाकी झंझट ऐसे संत की प्राप्ति मिलने के बाद है ही नहीं।
- जिस अंग से हम सत्संग में जुड़े हैं, वो पक्का करते रहो। कोई प्रेम से जुड़ा होगा–प्रेम से संत के साथ लगा रहे, करा करे, विश्वास का अंग होगा–विश्वास रख कर पड़ा रहे.....
- जहां अहं की वृत्ति होगी, वहां साधु का वचन नहीं माना जाएगा। साधु से ज्यादा प्यारा अगर हमें अपना अहं होगा, तो साधु के वचन नज़रअन्दाज हो जाएंगे। साधु प्राथमिकता पर होगा, तो वो हमेशा याद रहेंगे।
- भीतर की कोई झंझट आई हो, कोई वृत्ति परेशान कर जाती हो–स्वभाव, मन परेशान कर जाता है, तो 'स्वामिनारायण–स्वामिनारायण' तीव्र भजन करना। जितना तेजी से विचार आए, उतनी तेजी से धून करो तो विचार थम जाएंगे.....

- **सुबह-शाम बीस बीस मिनिट तो भगवान का भजन-भक्ति के लिए निकालना। हम वो भी नहीं निकाल पाते, फिर हम कहते हैं कि हम भगवान के हैं.....!**
- अपने नियम-मर्यादा में दृढ़ रहना, उसमें लुकाछिपी नहीं करना।
- प.पू. काकाजी शुरुआत से कई सालों से सभी को कहते कि किसी भी साधु का–चाहे वो वड़ताल का हो, अमदावाद का हो, गढ्ढा का हो, वैष्णव हो, जैनी हो–किसी का भी अभाव नहीं लेना। चाहे अपने सम्प्रदाय का हो या ना हो, झंझट में पड़ो ही नहीं। हो सके तो सेवा करो, पर अभाव-अवगुण में कभी भी पड़ना नहीं। सेवा ना हो सके तो कोई बात नहीं, पर असेवा मत करो।
- प.पू. काकाजी की बातों में कभी ऐसी कोई बात आई ही नहीं कि जल्दी ही अब तुम्हारा रहने का स्थान बन जाये, तुम्हारा सेटिंग हो जाये.....वगैरह। बस–ब्राह्मी स्थिति सबसे पहले कर लो। बल में हमें रहना है। यानि–विश्वास हमें रखना है कि वो हमारे लिए भजन करते हैं, सो जरुर हमारा काम–ब्राह्मी स्थिति कराने का पूरा करेंगे ही।
- यह पूरा एक महीना हम ऐसा भजन करें कि–और कुछ बने ना बने, प्रभु हमें ऐसी अनुभूति करा दें कि वे हमेशा मेरे साथ हैं। जहां धबक-धबक होता है वहां–सिर्फ विश्वास से नहीं, बल्कि अनुभूति भीतर से हो जाए कि वहां महाराज बैठे ही हैं। मेरी प्रार्थना सुनते हैं; मेरी बात सुनते हैं और जो मेरे हित में होगा, वो जरुर करेंगे ही करेंगे.....और कोई प्राप्ति हो या ना हो, हमें इतना जरुर कर लेना है।
- वैभवशाली सत्संग, शान-शौकत, कॉम्पीटीशन, शोभा यात्राएँ निकालना, प्रदर्शनियाँ करना; बापा ने यह करने हमें अपने से दूर नहीं किया.....प.पू. काकाजी हमें स्पीरीच्युअल टेक्नीशियन्स तैयार करना चाहते हैं.....
- विमुख प्रकरण के दौरान अमदावाद के जशुभाई भट्ट साहेब को प.पू. बापा ने कहा था कि संतों को कहना–मंदिर का पुजारी भगवान की मूर्ति के करीब रहता है, लेकिन यदि उसको भावना नहीं होगी तो भगवान उस पुजारी के नहीं; बल्कि मंदिर के बाहर भावनायुक्त खड़े हरिजन के रहेंगे। इसी तरह स्वरूप से दूर रह कर भी यदि दिव्यभाव से उनके होकर रहेंगे तो प्रभु इनके रहेंगे।
- भगवान या संत हर एक के भले दिखाई पड़े, लेकिन भीतर में इतना तो पक्का विश्वास होना ही चाहिए कि वे मेरे तो हैं ही। कभी भी हमारा मन इस बारे पल्टी मार ही ना पाए कि अब वे मेरे नहीं हैं। हर संजोगों में इतना विश्वास, इतनी निष्ठा भीतर में हो ही जानी चाहिए कि जब भी मैं प्रभु को याद करूँगा वो मेरे लिए खड़े ही होंगे।
- भजन, सेवा, समागम करके जीव का सत्संग करना है.....देखादेखी का, मन राजी हो, इसलिए शो-शा का, अपने देशकाल सुधरें इसलिए या अपने काम हो जाएँ इसलिए सत्संग नहीं करना। जीव का सत्संग यानि–अपनी वृत्तियों–स्वभाव से छुटकारा पाकर ब्रह्मभाव प्रगटा कर हम भगवान की मूर्ति में अखंड रहते हो जायें–वो जीव का सत्संग करना है।
- महाराज ने वच. लोया-17 में कहा कि भले हम त्यागी भी हो गये हों, लेकिन किसी पदार्थ के लिए, किसी चीज के लिए या जगह के लिए या चेलों के लिए झगड़ा होता है, तो समझना कि हमें ख्याल ही नहीं है कि हम किस लिए साधु हुए हैं। सब कुछ खोकर, बस–एक भगवान की मूर्ति रखनी है।
- हम कई बार अपने डिपार्टमेन्ट को लेकर मुक्तों के साथ झगड़ा करते हैं कि यह तो मेरा डिपार्टमेन्ट है। पर हम सोचें कि क्या अक्षरधाम में हम डिपार्टमेन्ट साथ ले जाने वाले हैं?
- प.पू. काकाजी कई बार कहते थे कि हम किसी क्रिया में बंधने नहीं आए हैं, हमे बंधना है तो सिर्फ ऐसे स्वरूप में....बंधना है ऐसे संत में.....
- मूर्ति में रह कर काम करने की अब आदत ही बना देनी। इसका अभ्यास करना पड़ता है क्योंकि अपनी कई वृत्तियाँ ऐसी होती हैं कि जो हमें अपने में खींच जाती हैं.....जहां हम फिसल जाते हैं। लेकिन आदत डालेंगे तो वो चीज हो जायेगी। यह बहुत जरुरी है, पर हम भूल जाते हैं। हमें पता नहीं कि–इतना अगर करेंगे तो भगवान हमेशा हमारी रक्षा के जमानती बने रहते हैं। तो इतना करने में हमारा क्या जाता है? पाण्डवों ने कौरवों से जुआ खेलने के समय पर यदि पहले दो मिनिट भगवान कृष्ण को याद किया होता तो ऐसा नहीं होता।
- जहां हमें सौंपा हो, वहां बड़ों से पूछ कर ही हर छोटी-बड़ी क्रिया करनी....हम सोचते हैं कि छोटी चीज में क्या पूछना? पर वो हमारे मन की चोरी होती है। प्रेस्टीज इश्यु बीच में आ जाती है कि मैं यह बात करूँगा तो मेरे बारे क्या सोचेंगे?
- कई बार हम कहते हैं कि स्वरूप को–संत को क्या बात करनी? वो तो अन्तर्यामी हैं–जानीजान हैं.....पर असल में अपनी त्रुटियाँ-गल्तियाँ संत को बता देनी चाहिए। वर्ना तो फिर बड़ा बम फटता है।
- हम अक्षरभुवन में रहते थे तब से काकाजी हमें ट्रेनिंग देते थे कि पू. महंतस्वामी जो कहें वही करना।

- साधु की हर आज्ञा में रहना। यह मेरे से नहीं होगा....यह मैं कर नहीं पाऊँगा, ऐसा तो हमें कभी बोलना ही नहीं चाहिए। असल में हम भूल जाते हैं कि हमें तो केवल हाँ ही करनी है; सेटिंग सारा तो महाराज कर देने वाले हैं। कई बार हम हमारे मान को ठेस ना लगे, लोग हमारी हंसी ना उड़ायें, इस कारण हम साधु की आज्ञा को ठुकरा देते हैं।
- काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे संत कभी कुछ सेवा के लिए कह दें तो उमंग से हाँ ही कर देना।
- साधु की आज्ञा हमेशा जीवलक्षी होती है। आज्ञा मानने से जीव का सत्संग शुरु हो जायेगा। हमें कौन-सी वृत्ति परेशान करती है वो क्लीयर कट साधु जानता है। सो, वो आज्ञा ही ऐसी करेगा जिससे कि उस पर चलने से हमारी वो वृत्ति टल जायेगी। वृत्ति ही तो हमें बार-बार जन्म-मरण के चक्कर में डालती है ! वो हमें नहीं पता होती; वो संत को पता होती है।
- संत के संबंध में आते ही वे हमें जरुरी कोई सूचन अवश्य करते हैं। साधु के साथ यदि अतिशय लगाव या उसका अतिशय भरोसा होगा तो वो बात पकड़ी जायेगी।
- हम सभी को पता है कि हमें क्या करना है? बातें भी सब एक ही हैं। पर, नियमित रूप से वर्तना ही बाकी रहा है। पहला कदम उठाने में ही तकलीफ पड़ती है। एक बार चलना शुरु हो जायेंगे तो फिर चलने में डर नहीं लगेगा। सो, बस करने लग पड़ना। (क्रमशः)

✡✡✡✡✡

गुरुपूर्णिमा का कृपाप्रसाद

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर **प.पू. दिनकरभाई** ने एकलव्य और गुरु द्रोण की बात करते हुए कहा कि–कौन-सा गुरु अपने शिष्य के ज्ञान को कम करने का प्रयत्न करेगा? बल्कि हर गुरु को ऐसा रहता है कि उसका शिष्य उससे बढ़ कर बने। उसी में गुरु का आनंद समाया है। फिर भी द्रोण जैसे गुरु ने एकलव्य से धनुर्विधा में अनिवार्य माना जाता दायें हाथ का अंगूठा गुरुदक्षिणा की भेंटरूप माँग लिया ! उसका रहस्य क्या होगा?

इस रहस्य को खोलते हुए प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि–'एकलव्य को अर्जुन के प्रति भीतर में ईर्ष्या थी कि मैं ज़रा उसे बता दूँ वगैरह-वगैरह। सो, गुरु को यह कदम उठाना पड़ा।'

हम सभी आज के दिन ऐसी प्रार्थना करें कि **हमसे ऐसा कोई वर्तन ना हो जिससे ऐसा कोई कदम हमारे गुरु को हमारे लिए उठाना पड़े।**

–'अक्षरधाम' पत्रिका के सौजन्य से

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 02.9.98	बुधवार	–	जलझीलनी एकादशी, व्रत
(2)	दि. 03.9.98	गुरुवार	–	वामन द्वादशी, फराली व्रत
(3)	दि. 09.9.98	बुधवार	–	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का श्राद्ध दिन
(4)	दि. 15.9.98	मंगलवार	–	श्रीजी महाराज व पू. जागास्वामी का श्राद्ध दिन
(5)	दि. 16.9.98	बुधवार	–	एकादशी का श्राद्ध, ब्र.स्व. योगीजी महाराज का श्राद्ध दिन
(6)	दि. 17.9.98	गुरुवार	–	गुरुहरि काकाजी महाराज का श्राद्ध दिन
(7)	दि. 18.9.98	शुक्रवार	–	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी व पू. भगतजी महाराज का श्राद्ध दिन

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393